5

धरम बिना कोई नहीं

धरम बिन कोई नहीं अपना,
सब सम्पत्ति धन थिर नहिं जग में,
जिसा रैन सपना ।।धरम.।।टेक।।

आगैं किया सो पाया भाई, याही है निरना।
अब जो करैगा सो पावैगा, तातैं धर्म करना ।।१।। धरम.।।

ऐसै सब संसार कहत है, धर्म कियैं तिरना।
परपीडा बिसनादिक सेवैं, नरक विषैं परना ।।२।। धरम.।।

नृप के घर सारी सामग्री, ताकैं ज्वर तपना।
अरु दारिद्री कैं हू ज्वर है, पाप उदय थपना ।।३।। धरम.।।

नाती तो स्वारथ के साथी, तोहि विपत भरना।
वन गिरि सरिता अगनि युद्ध में, धर्महि का सरना ।४। धरम.।।

चित बुधजन सन्तोष धारना, पर चिन्ता हरना।
विपति पडै तो समता रखना, परमातम जपना ।।५।। धरम.।।

हे जीव! इस जगत में सच्चे धर्म के अलावा अपना कोई साथी नहीं है। जगत के सभी संयोग धन–सम्पत्ति रात के स्वप्न के समान अस्थिर है ।

मुझे यह निर्णय हो गया है कि जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है और अब जो जैसा कर्म करेगा उसका फल आगामी काल में वैसा ही मिलेगा, इसलिये अब धर्म कार्य ही करना चाहिये।

जगत में सभी ज्ञानी जीव कहते हैं कि धर्म करने से ही संसार सागर से पार होते हैं और विषय भोग के सेवन तथा अन्य जीवों को दुख देने का फल तो नरक गति के दु:ख ही है।

जैसे राजा के पास सुख की सारी अनुकूल सामग्री होने पर भी बुखार आने पर उसे भी दुख होता है वैसे ही निर्धन व्यक्ति को भी बुखार आने पर दु:ख होता है अर्थात् पाप के उदय में सभी को दु:ख भोगना पड़ता है।

परिवार के नाती–पोते संबंधी आदि तो सभी स्वार्थ के साथी हैं और संकट ही उत्पन्न करने वाले हैं। अत: वन, पर्वत, नदी, अग्नि और युद्ध आदि स्थितियों में धर्म ही जीव को एकमात्र सहारा है।

बुधजन कवि कहते हैं कि इन सबको जानकर हमें मन में संतोष धारण करना चाहिये और अन्य चिन्ताओं को छोड़कर विपत्ति के आने पर समता भाव रखकर परमात्मा का, भगवन्तों का नाम स्मरण करना चाहिये।